

DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST
TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR
PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS+SUB)

LECTURE-6

मन का आकारात्मक पहलु

(Topographical aspect of mind)

फ्रायड के अनुसार; मन या मानसिक पहलू में तात्पर्य व्यक्ति के उन कारको में होता है जिसे हम अंतरात्मा (self of psyche) कहते हैं तथा जो हमारे व्यक्तित्व में संगठन पैदा करके हमारे व्यवहारों को वातावरण के साथ समायोजन करने में मदद करता है ।

फ्रायड ने मन के दो पहलुओ के अध्ययन पर अधिक बल डाला है :-

(1)मन का आकारात्मक पहलू (Topographical aspect of mind)

(2) मन का गत्यात्मक या संरचनात्मक पहलू (dynamic or structural aspect of mind)

मन के आकारात्मक पहलू का वर्णन निम्नांकित है :-

मन के **आकारात्मक** पहलू से तात्पर्य वैसे पहलू से होता है जहाँ संघर्षमय परिस्थिति की गत्यात्मकता उत्पन्न होती है |मन का आकरात्मक पहलू सचमुच में व्यक्तित्व की गत्यात्मक शक्तियों के बिच होने वाले संघर्षों का एक कार्यस्थल है| ब्राउन के अनुसार “मन का आकरात्मक पहलू वह है जहाँ संघर्षमय परिस्थितियों की गत्यात्मकता उत्पन्न होती है” |

फ्रायड द्वारा प्रतिपादित इस पहलू के अनुसार मन को निम्नांकित तीन स्तरों में बांटा गया है – **चेतन (conscious), अवचेतन (subconscious) तथा अचेतन (unconscious)**

इन तीनों का वर्णन इस प्रकार है :-

1.**चेतन –(conscious)** चेतन से तात्पर्य मन के वैसे भाग से होता है जिसमे वे सभी अनुभवों एवं सम्वेदनाये होती है जिनका सम्बन्ध वर्तमान से होता है |दुसरे शब्दों में जिन विचारों ,इच्छाओ ,अनुभवों एवं प्रत्यक्षणों से हम वर्तमान समय में अवगत रहते है ,वे सभी मिलकर चेतन का निर्माण करते है |

किस्कर के अनुसार “चेतन क्रियाओ का सम्बन्ध तात्कालिक अनुभवों से होता है |”

फ्रायड के अनुसार “मानसिक पहलु का एक छोटा सा हिस्सा ही चेतन में होता है।”

जैसे अभी आप यह नोट पढ़ रहे है अतः इस से जो अनुभूति आपके मन में हो रही है वह चेतन है | जब व्यक्ति किसी से बातचीत करता है तो उससे सम्बंधित जो अनुभव एवं विचार होते है ,वह चेतन होता है |

स्पष्ट है की चेतन का सम्बन्ध वास्तविकता से अधिक होता है |

फ्रायड के अनुसार चेतन की कुछ खास-खास विशेषताएँ होती हैं जिनमें से निम्नांकित प्रमुख हैं :-

- चेतन मन का सम्बन्ध बाहरी जगत की वास्तविकताओं के साथ सीधा होता है |
- यह मन का सबसे छोटा उपखंड है |
- चेतन मन अर्धचेतन तथा अचेतन पर प्रतिबन्ध का कार्य करता है |
- चेतन मन में वर्तमान विचारों एवं घटनाओं की जीवित स्मृति चिन्ह होते हैं। अतः उनकी पहचान तथा प्रत्याह्वान(recall) आसानी से किया जा सकता है |
- चेतन मन व्यक्तिगत, नैतिक, सामाजिक एवं संस्कृतिक आदर्शों का भंडार के सामान होता है |

2. अवचेतन (subconscious)-अवचेतन मन से तात्पर्य वैसे मन से होता है जो सचमुच में ना तो पूर्णतः चेतन होता है और ना ही पूर्णतः अचेतन ही होता है | इसमें वैसी इच्छाएँ, विचार भाव, आदि होते हैं जो हमारे वर्तमान चेतन या अनुभव में नहीं होते हैं परन्तु थोड़ा प्रयास करने पर वे हमारे चेतन मन में आ जाते हैं | अवचेतन को 'अर्धचेतन' तथा सुलभ स्मृति भी कहा जाता है |

किस्कर(1985)के अनुसार,

अवचेतन या अर्ध चेतन में वैसे मनोवैज्ञानिक या मानसिक घटनाएँ होती हैं जो चेतन से हटकर होती हैं परन्तु उन्हें स्मरण की प्रक्रिया द्वारा आसानी से प्राप्त किया जा सकता है |

इस परिभाषा से स्पष्ट है की अर्धचेतन की मानसिक अनुभूतियों या घटनाओं से तो व्यक्ति अवगत नहीं रहता है परन्तु थोड़ा सा प्रयास करने पर उसका प्रत्याह्वान कर लेता है और इस तरह से उससे अवगत हो जाता है | जैसे ,

किसी सम्बंधित तत्वों को यदि याद करना चाहते हैं तो वह तत्काल याद नहीं परता है परन्तु बाद में थोड़ा सा प्रयास करने पर हमें याद आ जाता है | आलमारी में हम किसी किताब को ढूँढते हैं और नहीं मिलने पर परेशान हो जाते हैं फिर कुछ सोचने के बाद हमें याद आता है की अरे वह किताब हम अपने मित्र को दिए थे | इन उदाहरणों से यह स्पष्ट है की व्यक्ति घटना से सम्बंधित तथ्य यानी किताब कहाँ होगी जैसे बातों को भूल नहीं गया था | बल्कि वह चेतन से हटकर अर्धचेतन में चला गया था | यही कारण है की वह उसे प्रयास कर जरूरत के अनुसार चेतन में ला पाया |

मनोविश्लेषणात्मक मनोवैज्ञान में अर्धचेतन की कुछ विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है |

इन विशेषताओं में निम्नांकित प्रमुख हैं :-

(i) अर्धचेतन मन का एक ऐसा भाग है जो चेतन से बड़ा परन्तु अचेतन से छोटा होता है |

(ii) अर्धचेतन, अचेतन तथा चेतन के बीच एक पूल का काम करता है | अचेतन से चेतन में जाने वाला भाव, इच्छा एवं विचार आदि अर्धचेतन होकर ही गुजरता है |

(iii) अर्धचेतन तथा चेतन के बीच का पर्दा कमजोर होता है | शायद यही कारण है की थोड़ा - सा प्रयास करने पर ही अर्धचेतन के भाव एवं विचार उस पर्दा को फारकर चेतन में आ जाता है |

3. अचेतन (unconscious)- फ्रायड के अनुसार मन का सबसे गहरा एवं बड़ा भाग अचेतन है |

फ्रायड ने इसे मन का सबसे महत्वपूर्ण भाग बतलाया है सचमुच में फ्रायड के पहले भी कई मनोवैज्ञानिकों जैसे –डेकार्त,लिविनिज तथा हेमहोलज़ ने अचेतन मन का अध्ययन किया था परन्तु फ्रायड ने सबसे पहले अचेतन का वैज्ञानिक अध्ययन करके उसका महत्व व्यक्तित्व के विकास में बतलाया ।

अचेतन का शाब्दिक अर्थ है जो चेतन या चेतना से परे हो । हमारे कुछ अनुभव इस प्रकार के होते हैं जो ना तो हमारी चेतना में होते हैं और ना ही अर्धचेतन में । ऐसे अनुभव अचेतन में होते हैं ।अचेतन मन में रहने वाले विचार एवं इच्छाओं का स्वरूप कामुक , असामाजिक ,नैतिक तथा घृणित होता है।चूँकि ऐसी इच्छाएँ एवं विचारों को दिन – प्रतिदिन की जिन्दगी में पूरा करना संभव नहीं होता है ,अतः उनको चेतन से हटा कर अचेतन में दमित कर दिया जाता है ।जब वैसी इच्छाओं एवं विचारों को अचेतन में दमित कर दिया जाता है ,तो वे अचेतन में जा कर समाप्त नहीं हो जाते हैं बल्कि थोड़ी देर के लिए निष्क्रिय अवश्य हो जाते हो परन्तु हमेशा चेतन में आने के लिए प्रत्यन भी करते रहते हैं ।स्वप्न दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ,सम्मोहन आदि कुछ प्रमुख अवसर हैं जहाँ अचेतन की अनुभूतियाँ चेतन में व्यक्त होती हैं ।जैसे,किसी मित्र के घर पर यदि कलम या किताब छोड़ कर हम चले आते हैं तो फ्रायड के अनुसार हमें उस मित्र में पुनः मिलने की इच्छा रहती है जो अचेतन में चली जाती है वही इच्छा वेश बदलकर चेतन में (अर्थात कलम या किताब मित्र के घर पर छोड़ देने के रूप में)व्यक्त होती है ।